The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वेदांत, मीमांसा) और शिक्षा का स्वरूप

श्रीमती बबीता सिंह

सहायक प्राध्यापक (शिक्षा), देव संस्कृति कॉलेज ऑफ, एजुकेशन एण्ड टेक्नोलॉजी, खपरी दुर्ग (छ.ग.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797482

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 15-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

भारतीय दर्शन, शिक्षा का स्वरूप, मोक्ष, आत्मज्ञान, नैतिकता।

ABSTRACT

भारतीय दर्शन केवल तात्विक चिंतन की परंपरा नहीं है बल्कि यह मानव जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु एक सुदृढ़ शैक्षिक प्रणाली भी प्रस्तुत करता है। भारतीय दर्शन की प्रमुख आस्तिक दर्शनों, सांख्य, योग, न्याय, वेदांत और मीमांसा में शिक्षा का स्वरूप ज्ञान आचरण, नैतिकता एवं आत्मोद्धार पर आधारित है। इन दर्शनों में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि आत्मबोध, विवेक, चरित्र निर्माण तथा मोक्ष की प्राप्ति है। यह शोध पत्र इन पाठ्यवस्तु, विधियों तथा समकालीन प्रासंगिकता भारतीय दर्शन विश्व की अत्यंत प्राचीन और व्यापक ज्ञान परंपरा है।

प्रस्तावना :

भारतीय दर्शन विश्व की व्यापक ज्ञान परंपरा एवं प्राचीन पृष्ठभूमि है। इसके विवध, दर्शनों ने मानव जीवन, समाज, धर्म, ज्ञान और मोक्ष के विषय में विशिष्ट विचार प्रस्तुत किए है। शिक्षा का स्वरूप यहां केवल विद्यार्जन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसे आत्मिक, नैतिक, बौद्धिक तथा व्यवहारिक उन्नति का माध्यम माना गया। सांख्य के विवेकज्ञान से लेकर योग के चित्तवृत्ति – निरोध, न्याय के तार्किक विवेचन, वेदांत के ब्रम्हज्ञान तथा मीमांसा के कर्त्तव्यवाद सभी में शिक्षा की अपनी–अपनी दृष्टि विद्यमान है। इसी आधार भारतीय दर्शन शिक्षा के स्वरूपक ा अध्ययन करता है। भारतीय दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि आत्मबोध नैतिक जीवन और मोक्ष की प्राप्ति है। भारतीय दर्शन शिक्षा का केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं मानता, बल्कि इसे आत्मबोध, नैतिकता, चरित्र निर्माण और मोक्ष की प्राप्ति का माध्यम स्वीकार करता है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक, नैतिक एवं व्यवहारिक जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस शोध पत्र मं सांख्य, योग, न्याय, वेदांत एवं मीमांसा दर्शनों के आधार पर शिक्षा का

उद्देश्य, स्वरूप, साधन एवं वर्तमान संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। भारतीय दर्शन की शिक्षा प्रणाली समग्र व्यक्तित्व विकास पर आधारित है, जो आधुनिक शिक्षा के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

अध्ययन का उद्देष्य –

1. भारतीय दर्शन में शिक्षा की अवधारणा को समझना।
2. सांख्य, योग्य, न्याय, वेदांत, मीमांसा दश्नन में शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करनाा।
3. विभिन्न दर्शनों के शैक्षिक उद्देश्यों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
4. आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में भारतीय दार्शनिक की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

अनुसंधान पद्धति –

अनुसंधान हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसके अध्ययन हेतु द्वितीय स्रोतों जैसे दर्शन ग्रंथ, शैक्षिक पुस्तकें, शोध पत्र एवं संदर्भ साहित्य का उपयोग किया गया है।

भारतीय दर्शन में शिक्षा की अवधानणा –

भारतीय दर्शन में शिक्षा को 'विधा' कहा गया है, जिसका अर्थ है कि जो अज्ञान का नाश करें। उपनिषदों में भी कहा गया है कि सच्ची विधा वही है, जो आत्मा का साक्षात्कार कराए। इस प्रकार शिक्षा को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया।

भारतीय शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ –

- आध्यात्मिकता पर बल
- नैतिक मूल्यों की शिक्षा
- गुरू–शिष्य परंपरा
- आत्म संयम एवं अनुशासन
- जीवनापयोगी ज्ञान

सांख्य दर्षन में शिक्षा का स्वरूप –

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की सबसे प्राचीन दर्शन परंपराओं में से एक है। इसके प्रवर्तक महर्षि कपिल माने जाते है।

सांख्य दर्शन का अर्थ –

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्राचीन और महत्वपूर्ण शाखा है, जिसका मुख्य उद्देश्य सृष्टि और जीवन के सत्य को तत्त्वों के विश्लेषण के माध्यम से समझाना है। 'सांख्य' शब्द का अर्थ है संख्या या गणना, अर्थात् इस दर्शन में जगत की रचना करने वाले तत्वों की गिनती और विवेचना की जाती है। सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि का मूल कारण प्रकृति है, जबकि पुरुष चेतन तत्त्व है। प्रकृति जड़ है और पुरुष चेतन, दोनों के संयोग से ही संसार की उत्पत्ति होती है। इस दर्शन में 24 तत्त्वों का वर्णन मिलता है, जैसे बुद्धि, अहंकार, मन, इंद्रियाँ और पंचमहाभूत, तथा 25वाँ तत्त्व पुरुष माना गया है। जब पुरुष अपने को प्रकृति से भिन्न जान लेता है, तब उसे सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है और वही मोक्ष का मार्ग है।

उदाहरण –

जैसे कोई व्यक्ति किसी मशीन को चलती हुई देखता है। मशीन के सभी पुर्जे (पुर्जे = प्रकृति के तत्त्व) काम कर रहे होते हैं, लेकिन उन्हें देखने–समझने वाला व्यक्ति अलग होता है। उसी प्रकार शरीर–मन–बुद्धि प्रकृति के भाग हैं, जबकि उन्हें देखने वाला साक्षी पुरुष है। इस भेद को समझ लेना ही सांख्य दर्शन के अनुसार मुक्ति का मार्ग है।

- **सांख्य दर्षन का मूल सिद्धांत –**

सांख्य दर्शन द्वैतवादी हैं। यह पुरूष (चेतन) और प्रकृति (अचेतन) के भेद को स्वीकार करता है। अज्ञान के कारण पुरूष स्वयं को प्रकृति से अभिन्न मान लेता है।

- **शिक्षा का उद्देष्य –**

सांख्य दर्शन में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विवेक ज्ञान उत्पन्न करना है, जिससे पुरूष और प्रकृति के भेद को समझा जा सके।

शिक्षा का स्वरूप –

- तत्वज्ञान पर बल
- बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास
- अज्ञान का नाश
- मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

सांख्य दर्शन के अनुसार शिक्षा वह प्रक्रिया है जो आत्मा को बंधन से मुक्त करती है।

➢ **योग दर्षन में षिक्षा का स्वरूप –**

योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजली माने जाते है। यह सांख्य दर्शन पर आधारित है परंतु व्यवहारिक पक्ष को अधिक महत्व देता है।

योग दर्शन का अर्थ –

योग दर्शन भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसका मुख्य उद्देश्य चित्त की वृत्तियों का निरोध करके आत्मज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति करना है। 'योग' शब्द का अर्थ है जोड़ना या एकत्व स्थापित करना, अर्थात् जीवात्मा का परमात्मा से संबंध स्थापित करना। महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग दर्शन के अनुसार मन चंचल होता है और उसकी चंचलता ही दुःख का कारण है। जब मन को संयम और अभ्यास के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, तब मन शांत होता है और साधक को आत्मसाक्षात्कार होता है। योग दर्शन में अष्टांग योग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि – का वर्णन किया गया है, जिनके अभ्यास से मनुष्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि प्राप्त करता है।

उदाहरण –

जैसे शांत जल में आकाश का प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई देता है, वैसे ही जब योग के अभ्यास से मन की चंचलता समाप्त हो जाती है, तब आत्मा का सच्चा स्वरूप स्पष्ट रूप से अनुभव होता है।

➢ **योग दर्षन का सिद्धांत –**

योग दर्शन के अनुसार दुख का कारण चित्तवृत्तियाँ है। जब तक चित्त चंचल है, तब तक मोक्ष संभव नहीं।

➢ **शिक्षा का उद्देष्य –**

योग दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य चित्तवृत्तियों का निरोध है।

➢ **शिक्षा का स्वरूप –**

- आत्मसंयम एवं अनुशासन
- अष्टांग योग की शिक्षा
- नैतिक जीवन (यम नियम)

- शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास

  योग दर्शन में शिक्षा साधना की एक सतत् प्रक्रिया है।

➢ **न्याय दर्षन में शिक्षा का स्वरूप –**

न्याय दर्शन तर्क और प्रमाण पर आधारित दर्शन है। इसके प्रवर्तक महर्षि गौतम माने जाते है।

- न्याय दर्शन का सिद्धांत – न्याय दर्शन चार प्रमाणों को मान्यता देता है – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द
- शिक्षा का उद्देश्य – शिक्षा का उद्देश्य यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति है।

➢ **शिक्षा का स्वरूप –**

- तर्कशीलता का विकास
- विवेक एवं विश्लेषण की क्षमता

न्याय दर्शन में शिक्षा तर्क, विवेक और प्रमाण आधारित ज्ञान पर आधारित है।

न्याय दर्शन का अर्थ –

न्याय दर्शन भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसका मुख्य उद्देश्य सही ज्ञान (प्रमाणिक ज्ञान) की प्राप्ति करना है। 'न्याय' शब्द का अर्थ है युक्ति, तर्क या विवेकपूर्ण निर्णय। इस दर्शन में तर्क और प्रमाण के माध्यम से सत्य को समझने पर विशेष बल दिया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार जब मनुष्य को सही प्रमाणों के आधार पर वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान हो जाता है, तब वह अज्ञान से मुक्त होता है और दुःखों का नाश होता है। इस दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के चार प्रमुख प्रमाण माने गए हैं– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। तर्कशक्ति और विवेक के उचित प्रयोग से ही सत्य तक पहुँचना न्याय दर्शन का मुख्य लक्ष्य है।

उदाहरण –

जैसे दूर से धुआँ देखकर आग का अनुमान लगाया जाता है। यहाँ धुआँ प्रत्यक्ष प्रमाण है और आग का ज्ञान अनुमान के द्वारा होता है। यह प्रक्रिया न्याय दर्शन की तर्क–पद्धति को स्पष्ट करती है।

वेदांत दर्षन में षिक्षा का स्वरूप –

वेदांत दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि आत्मबोध और मोक्ष की प्राप्ति है। यह शिक्षा मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व–शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिकता का विकास करती है।

वेदान्त दर्शन का अर्थ

वेदान्त दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्रमुख शाखा है, जिसका आधार उपनिषद् हैं और जिसका मुख्य विषय ब्रह्म, आत्मा और जगत का स्वरूप है। 'वेदान्त' शब्द का अर्थ है वेदों का अंत या अंतिम ज्ञान, अर्थात् वेदों में निहित सर्वोच्च दार्शनिक सत्य। वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही परम सत्य है और आत्मा उसी ब्रह्म का अंश अथवा स्वरूप है। अज्ञान के कारण मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाता और स्वयं को शरीर व संसार से जोड़ लेता है। जब ज्ञान के द्वारा आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध होता है, तब अज्ञान नष्ट होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेदान्त दर्शन में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य को मुक्ति के प्रमुख साधन माना गया है।

उदाहरण –

जैसे रस्सी को अंधेरे में साँप समझ लिया जाता है, लेकिन प्रकाश होने पर सच्चाई का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार अज्ञान के कारण आत्मा स्वयं को अलग मानती है, परंतु ज्ञान होने पर उसे अपने ब्रह्मस्वरूप का बोध हो जाता है।

वेदांत दर्षन का सिद्धांत –

वेदांत दर्शन के अनुसार शिक्षा आत्मज्ञान पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की प्राप्ति की ओर ले जाना और आत्मा तथा ब्रम्ह की एकता का बोध कराना है। वेदांत शिक्षा मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता है न केवल आजीविका का माध्यम। यह शिक्षा गुरू–शिष्य परंपरा पर आधारित होती है। इस प्रकार वेदांत दर्शन की शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करके, सत्य, ज्ञान और आनंद की ओर अग्रसर होता है।

शिक्षा का उद्देष्य –

शिक्षा का उद्देश्य मानव जीवन को पूर्ण, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनाने वाला है।

शिक्षा का स्वरूप –

- समग्र विकास
- जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया
- ज्ञानात्मक और व्यवहारिक

- चरित्र निर्माण
- सामाजिक प्रक्रिया
- संस्कृति का संरक्षण व विकास
- व्यक्तिगत भिन्नताओं का समाधान

वेदांत दर्शन में प्रत्येक मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

मीमांसा दर्षन –

मीमांसा दर्शन भारतीय दर्शनों में एक महत्वपूर्ण दर्शन है, जो मुख्यतः वेदों की व्याख्या, कर्मकाण्ड और धर्म पर आधारित है – मीमांसा के अनुसार शिक्षा का स्वरूप वेद, धर्म, कर्म, गुरूकुल, अनुशासन व व्यवहारिक शिक्षा है।

मीमांसा दर्शन का अर्थ

मीमांसा दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्राचीन शाखा है, जिसका मुख्य विषय वेदों के कर्मकाण्ड भाग की व्याख्या और यज्ञ–कर्मों का महत्व समझाना है। 'मीमांसा' शब्द का अर्थ है गहन विचार, जाँच या विवेचना। इस दर्शन के अनुसार वेद अपौरुषेय (मनुष्य द्वारा रचित नहीं) हैं और उनमें बताए गए कर्मों का विधिपूर्वक पालन करने से धर्म की प्राप्ति होती है। मीमांसा दर्शन कर्म को ही जीवन का मुख्य साधन मानता है और यह प्रतिपादित करता है कि यज्ञ, दान और वैदिक कर्मों के द्वारा मनुष्य सांसारिक सुख तथा स्वर्ग की प्राप्ति कर सकता है। इस दर्शन में धर्म को वेदविहित कर्मों के पालन से जोड़ा गया है।

उदाहरण –

जैसे खेती में बीज बोने पर ही फसल मिलती है, उसी प्रकार वेदों में बताए गए कर्मों को विधि अनुसार करने पर ही उनका फल प्राप्त होता है। यही मीमांसा दर्शन का मूल सिद्धांत है।

मीमांसा दर्षन का सिद्धांत –

मीमांसा दर्शन भारतीय षड्दर्शनों में एक महत्वपूर्ण दर्शन है, जिसकी स्थापना महर्षि जैमिनी ने की। इसका मुख्य विषय वेदों की व्याख्या कर्म और धर्म है। वेद किसी व्यक्ति द्वारा रचित नहीं है, वे नित्य और स्वतः प्रमाण है। वेदों द्वारा बताए गए विधि (करने योग्य) और निषेध (न करने योग्य) कर्म ही धर्म है। कर्म को सर्वोच्च मानता है। ''कर्म की प्रधानता को महत्व दिया गया है न ही ज्ञान को''

मीमांसा दर्षन का उद्देष्य –

धर्म का ज्ञान प्राप्त करना, कर्त्तव्य की समझ, यज्ञ, कर्म और वैदिक विधानों के पालन करने योग्य बनाना। शिक्षा का कार्य वेदों के शब्द और अर्थ का सही बोध कराना है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को सही कार्य करने के लिए प्रेरित करना है।

मीमांसा दर्षन के अनुसार षिक्षा का स्वरूप –

- वेद प्रधान शिक्षा
- धर्म की शिक्षा
- कर्म प्रधानता
- गुरूकुल प्रणाली
- अनुशासन और आचार
- मोक्ष की अप्रत्यक्ष साधना

मीमांसा दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति से अधिक सही कर्म की प्रेरणा देना है। जिससे व्यक्ति धर्मपूर्ण और अनुशासित जीवन जी सके।

भारतीय दर्शन की 6 आस्तिक दर्शनों में से सांख्य, न्याय, योग, वेदांत, मीमांसा के अनुसार शिक्षण विधियां –

सांख्य दर्षन के अनुसार षिक्षा की विधि

मुख्य आधार – विवेक ज्ञान

- विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति
- प्रकृति और पुरूष के भेद का बोध
- तर्क और अनुभव आधारित शिक्षा

योग दर्षन के अनुसार षिक्षा की विधि –

मुख्य आधार – आत्मसंयम और साधना

- अभ्यास (नियमित)

- ध्यान एवं साधना
- अनुशासनात्मक पद्धति
- गुरू–शिष्य परंपरा

अष्टांग योग के माध्यम से शिक्षा–यम, नियम, आसन, प्रणयाम, प्रव्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि

न्याय दर्षन के अनुसार षिक्षा की विधि –

मुख्य आधार – तर्क, प्रमाण और विवेक

- प्रश्न उत्तर विधि
- तर्क–वितर्क
- अनुमान एवं प्रमाण आधारित शिक्षा
- विश्लेषणात्मक पद्धति

वेदांत दर्षन के अनुसार षिक्षा विधि –

मुख्य आधार– ब्रम्हज्ञान

षिक्षा विधि –

- श्रावण (गुरू की सुनना)
- मनन (चिंतन)
- निविध्यासन (ध्यान)
- आत्मानुकूति पर आधारित शिक्षण

मीमांसा दर्षन के अनुसार षिक्षा की विधि –

मुख्य आधार – कर्म और वेदों की व्याख्या

षिक्षा विधि –

- वेद पाठ एवं मंत्रोच्चार
- स्मरण एवं अभ्यास शिक्षण

- अनुशासनात्मक शिक्षण
- कर्मकांड आधारित प्रशिक्षण

भारतीय दर्शन में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति नही बल्कि आत्मिक उन्नति, नैतिक विकास और जीवन के परम लक्ष्य (मोक्ष) की प्राप्ति का साधना है। सभी दर्शनों में गुरू की भूमिका, अनुशासन और आत्मचिंतन के अत्यंत महत्व है।

भारतीय दर्षन का शिक्षा में महत्व –

भारतीय दर्शन शिक्षा को केवल रोजगार पाने का सावधान नहीं मानता, बल्कि उसे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम मानता है। इसका उद्देश्य मनुष्य को ज्ञानवान, चरित्रवान और समाजोपयोगी बनाना है।

- चरित्र निर्माण पर बल – भारतीय दर्शन सत्य, अहिंसा, संयम, करूणा और नैतिकता जैसे मूल्यों पर जोर देता है। शिक्षा के माध्यम से इन मूल्यों का विकास विद्यार्थी के चरित्र को महबूत बनाता है।
- आत्मज्ञान और आत्म विकास – उपनिषदों और गीता के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य आत्मज्ञान है। इससे विद्यार्थी अपने कर्त्तव्यों, क्षमताओं और जीवन के उद्देश्य को समझता है।
- गुरू – शिष्य परंपरा – भारतीय दर्शन में गुरू को केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक माना गया है। यह परंपरा शिक्षा को मानवीय, संवेदनशील और अनुशासित बनाती है।
- समग्र विकास – यह दर्शन शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक चारों प्रकार के विकास पर बल देता है। योग, ध्यान और नैतिक शिक्षा इसी का हिस्सा है।
- सामाजिक उत्तरदायित्व – शिक्षा को समाज से जोड़कर देखा गया है। ''वसुधैव कुटूम्बकम्'' की भावना विद्यार्थियों में सहयोग, सह–अस्तित्व और सेवा भाव विकसित करती है।
- जीवनोपयोगी शिक्षा – भारतीय दर्शन व्यवहारिक ज्ञान, कर्मयोग और जीवन कौशल पर जोर देता है, जिससे विद्यार्थी जीवन की चुनौतियों का सामना कर सके।

भारतीय दर्शन शिक्षा को मूल्य आधारित, उद्देश्यपूर्ण और मानव केंद्रित बनाता है। आज की आधुनिक शिक्षा में इसके सिद्धांतों को अपनाकर हम न केवल कुशल पेशेवर, बल्कि अच्छे इंसान भी बना सकते हैं।

भारतीय दर्षन पर शोध अध्ययन –

शोध

- **जीवन और सत्य की खोज**
  - मनुष्य मै कौन हूँ ? जीवन के उद्देश्य क्या है ?
  - भारतीय दर्शन आत्मा, चेतना और मोक्ष की गहन व्याख्या देता है।
- **दुख और समस्याओं का समाधान**
  - बौद्ध, योग और वेदांत दर्शन दुख के कारण और उससे मुक्ति के मार्ग बताते है।
  - मानसिक शांति और संतुलन हेतु शोध
- **नैतिकता और मूल्य**
  - कर्म, धर्म, अहिंसा, करूणा जैसे सिद्धांतों को समझना
  - समाज और व्यक्ति के आचरण को दिशा देने हेतु
- **तर्क और ज्ञान–विज्ञान**
  - न्याय और वैशेषिक दर्शन की तार्किक पद्धति का अध्ययन।
  - ज्ञान के स्रोत (प्रमाण) समझने हेतु शोध
- **योग और ध्यान का वैज्ञानिक महत्व**
  - योग, ध्यान, प्राणायाम के शारीरिक और मानसिक लाभ जानना
  - आधुनिक विज्ञान से जोड़ना
- **पूर्व और पश्चिम तुलनात्मक अध्ययन**
  - भारतीय और पाश्चात्य दर्शन की तुलना
  - वैश्विक बौद्धिक संवाद हेतु
- **संस्कृति और विरासत का संरक्षण**
  - प्राचीन ग्रंथों, परंपराओं और ज्ञान को सुरक्षित रखने हेतु
  - नई पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु

शोध का मुख्य कारण मानव जीवन को भारतीय दर्शन के माध्यम से अर्शपूर्ण, संतुलित और शांत बनाना है।

1. भारत में शोध केंद्र

- **विष्वविद्यालय** – काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU), दिल्ली विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय, पुणे विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय

- **संस्थान** – भारतीय दर्शन परिषद, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भारतीय विद्या भवन
- **गुरूकुल और संस्कृत महाविद्यालय** – वेद, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र का पारंपरिक अध्ययन हुआ।

निष्कर्ष :

भारतीय दर्शन केवल धार्मिक नहीं बल्कि तार्किक, वैज्ञानिक और अनुभवपरक है। जीवन के उद्देश्य, नैतिकता, चेतना और मुक्ति का गहरा विचार प्रस्तुत करता ळें

2. विदेषों में शोध –

- देश – जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, जापान
- विश्वविद्यालय – ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड, हीडलबर्ग, टोक्यों विश्वविद्यालय

विदेशों में भी भारतीय संस्कृति व दर्शन पर शोध अध्ययन किया गया इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी दर्शन से भारतीय दर्शनों की तुलना करना था।

निष्कर्ष :

उपनिषद, वेदांत, बौद्ध और जैन दर्शन की तुलना ग्रीक और पश्चिमी दर्शन से की गई जिसमें पाया कि भारतीय विचारों को आधुनिक मनोविज्ञान से जोड़ा गया है।

3. दर्षन की विभिन्न शाखाओं पर शोध

- षड्दर्शन–न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत
- बौद्ध और जैन दर्शन

निष्कर्ष :

इन शाखाओं के माध्यम से तर्क और अनुभव दोनों का संतुलन दुखों से मुक्ति, अहिंसा, करूणा और आत्मज्ञान पर जोर पाया गया।

4. आधुनिक शोध और निष्कर्ष :

- योग और ध्यान का मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव
- अद्वैत वेदांत में चेतना की अवधारणा आधुनिकता से मेल खाता है।

- कर्म सिद्धांत को नैतिक दर्शन के रूप में समझा गया है।

शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय दर्शन एक जीवंत व्यवहारिक और सर्वकालिक विचार परंपरा है, जो आज भी जीवन, समाज और विज्ञान को दिशा दे सकती है।

भारतीय दर्षन का आधुनिक शिक्षा के स्वरूप में योगदान –

भूमिका :

भारतीय दर्शन केवल आध्यात्मिक विचार नहीं है, बल्कि यह शिक्षा के व्यवहारिक जीवन से जोड़ती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसके स्वरूप की व्याख्या अत्यंत विचारणीय एवं उपयोगी है। भारतीय दर्शन वह विचारधारा है जो सत्य, आत्मा, कर्म, धर्म और मोक्ष जैसे विषयों पर आधारित है। वेद, उपनिषद, गीता, बौद्ध और जैन दर्शन इसके प्रमुख स्त्रोत है।

➢ **सर्वांगीण विकास की अवधारणा –**

भारतीय दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान देना नहीं है बल्कि विद्यार्थी कर शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास करना भी है। आधुनिक शिक्षा में इसे सर्वांगीण विकास या Holistic Development कहा जाता है। आज की शिक्षा प्रणाली का स्वरूप विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक व्यवहार पर भी ध्यान देती है, जो भारतीय दर्शन की ही देन है।

➢ **मूल्य आधारित शिक्षा –**

भारतीय दर्शन सत्य, अहिंसा, करूणा, आत्मसंयम और नैतिकता पर विशेष बल देता है। आाधुनिक शिक्षा में मूल्य–शिक्षा और नैतिक शिक्षा का समावेश इन्हीं सिद्धांतों से प्रेरित है। इससे विद्यार्थियों में ईमानदारी, सहानुभूति और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होते है। जो उन्हें अच्छा नागरिक बनाते है।

➢ **योग व ध्यान का महत्व –**

योग और ध्यान भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण देन है। आधुनिक शिक्षा में इन्हें अपनाने का उद्देश्य विद्यार्थियों की एकाग्रता बढ़ाना, तनाव को कम करना और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाना है। आज कई विद्यार्थियों और विश्वविद्यालयों में योग शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। जिससे विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन भी बेहतर होता है।

- **षिक्षक षिष्य परंपरा –** भारतीय दर्शन में शिक्षक को केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि जीवन पथ का मार्गदर्शक माना गया है। आधुनिक शिक्षा में मेटॉर सिस्टम और परामर्श व्यवस्था इसी विचार से विकसित हुई है। इससे शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विश्वास और सहयोग का संबंध स्थापित होता है।
- **आत्म अनुषासन और स्वाध्याय –**

भारतीय दर्शन आत्मअनुशासन, स्वाध्याय और आत्मचिंतन पर बल देता है। आधुनिक शिक्षा में Self Learning और जीवन कौशल शिक्षा (Life Skills Education) इसी सिद्धांत पर आधारित है। इससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास का विकास होता है।

- **कर्म सिद्धांत और उत्तरदायित्व –**

कर्म सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति को अपने कार्यों का उत्तरदायित्व स्वयं लेना चाहिए। आधुनिक शिक्षा में यह सिद्धांत विद्यार्थियों को पश्चिमी जिम्मेदार और कर्त्तव्यनिष्ठ बनाता है। इससे उनमें कार्यो के प्रति गंभीरता और आत्मप्रेरणा उत्पन्न होती है।

- **सहिष्णुता और वैश्विक दृष्टिकोण –**

भारतीय दर्शन ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना सिखाता है, जिसका अर्थ है कि पूरा संसार एक परिवार है। आधुनिक शिक्षा में यह विचार सहिष्णुता, आपसी सम्मान और वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देता है। इससे विद्यार्थी विविध संस्कृतियों और विचारों को स्वीकार करना सीखते है।

भारतीय दर्शन के शोध से शिक्षा के स्वरूप में सुधार (अनुच्छेद) –

भारतीय दर्शन पर किए गए शोध से शिक्षा के स्वरूप में महत्वपूर्ण सुधार संभव है। भारतीय दर्शन केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र, आचरण और जीवन–दृष्टि का निर्माण करता है। सांख्य, योग, वेदान्त, न्याय और मीमांसा जैसे दर्शनों के अध्ययन से शिक्षा में तर्कशक्ति, आत्मअनुशासन, नैतिकता और आत्मज्ञान का विकास होता है। योग दर्शन से मानसिक एकाग्रता और आत्मसंयम की शिक्षा मिलती है, जिससे विद्यार्थी तनावमुक्त होकर अध्ययन कर सकते हैं। न्याय दर्शन तर्क और विवेकशील सोच को विकसित करता है, जिससे छात्रों में प्रश्न करने और सही निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। वेदान्त दर्शन आत्मबोध और सार्वभौमिक एकता की भावना उत्पन्न करता है, जिससे शिक्षा मानवतावादी बनती है। मीमांसा दर्शन कर्तव्यबोध और कर्मप्रधान जीवन की शिक्षा देता है। इस प्रकार भारतीय दर्शन के शोध को शिक्षा में

समावेश करने से शिक्षा केवल रोजगारोन्मुख न होकर मूल्यपरक, जीवनोपयोगी और सर्वांगीण विकास पर आधारित बन सकती है।

भारतीय दर्षन में षिक्षा के स्वरूप पर विभिन्न दर्षनों का प्रभाव –

भारतीय दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि आत्म विकास, नैतिक उत्थान और मोक्ष की प्राप्ति रहा हो। योग, सांख्य, न्याय, वेदांत और मीमांसा दर्शनों ने शिक्षा के स्वरूप को अलग–अलग दृष्टिकोणों से प्रभावित किया है। यह ज्ञान केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित न होकर व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास से जुड़ा हुआ है। योग दर्शन ने शिक्षा में आत्मसंयम, अनुशासन और एकाग्रता पर बल दिया जिससे ध्यान, साधना और गुरू–शिष्य परंपरा को विशेष महत्व मिलना सांख्य दर्शन ने विवेक और तर्क के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति को प्रममुख माना, जिससे शिक्षा में विश्लेषणात्मक सोच और आत्मबोध का विकास हुआ। न्याय दर्शन ने प्रमाण, तर्क और वाद–विवाद को शिक्षाा का आधार बनाकर आलोचनात्मक और तार्किक चिंतन को प्रोत्साहन किया। वेदांत दर्शन ने शिक्षा को आत्मा और ब्रम्ह के ज्ञान का साधन माना तथा सत्य वैराग्य और नैतिक मूल्यों पर जोर दिया वहीं मीमांसा दर्शन ने वेदाध्ययन, कर्मकाण्ड और कर्त्तव्य पालन को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बताया। इस प्रकार भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं ने मिलकर शिक्षा को समग्र मूल्यपरक और जीवनोपयोगी स्वरूप प्रदान किया।

निष्कर्ष –

भारतीय दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल सांसारिक ज्ञान देना नही बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और आत्म ज्ञान की प्राप्ति है। न्याय दर्शन में शिक्षा की विधि तर्क, प्रमाण और प्रश्न उत्तर के माध्यम से सत्य पर आधारित खोज है। योग दर्शन में शिक्षा अभ्यास, अनुशासन, ध्यान और आत्मसंयम द्वारा मानसिक एवं शारीरिक शुद्धि पर बल देती है। दर्शन के अनुसार शिक्षा श्रवण, मनन और निदिध्यासन की प्रक्रिया से आत्मज्ञान और ब्रम्हज्ञान की ओर ले जाती है। मीमांसा दर्शन की शिक्षा वेदों के अध्ययन, कर्मकांड और नैतिक कर्त्तव्यों की पालन पर आधारित है, जिससे व्यक्ति धर्ममय जीवन जी सके एवं सांख्य दर्शन शिक्षा को विवेकपूर्ण ज्ञान द्वारा प्रवृत्ति और पुरूष के भेद की समझ से जोड़ता है, जिससे अज्ञान का नाश होता है।

इस प्रकार भारतीय दर्शन में शिक्षा जीवन को शुद्ध, अनुशासित और आध्यात्मिक रूप से उन्नत बनाने का माध्यम है। इस प्रकार भारतीय दर्शन ने आाधुनिक शिक्षा की मानवीय नैतिक और संतुलित प्रदान किया है। यह शिक्षक को केवल रोजगार का साधन न बनाकर, जीवन को सार्थक बनाने का माध्यम बनाता है।

संदर्भ :

- भारतीय ज्ञान परंपरा में दार्शनिक पहलू हरिश कुमार सिंह (2025), International Education and Research Journal. DOI: 10.5281/zenodo.15833839 – भारतीय दार्शनिक परंपरा, तर्क, प्रमाण, मोक्ष, आत्मा, विविध मतों का समावेश आदि का व्यापक विवेचन।
- भारतीय दर्शन, धर्म और ज्ञान परंपरा शिवरानी (2023), International Journal of Arts, Humanities and Social Studies, 5(2), 74-78. DOI: 10.33545/26648652.2023.v5.i2a.213 – समग्र भारतीय दर्शन के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श पर शोध।
- Meditation and Mindfulness in Indian Philosophical Traditions Dr. Rishika Verma (2025). - ध्यान व माइंडफुलनेस के वैदिक, योग और बौद्ध दर्शन में ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक अध्ययन।
- Indian Council of Philosophical Research 'दर्शनम्' शोध–पत्रिका – हिन्दी/संस्कृत शोध लेख प्रकाशित होती है।
- JSTOR/Google Scholar – खोज सर्च जैसे ''भारतीय दर्शन शोध–पत्र'', "Indian Philosophy research paper", "Vedanta epistemology research" आदि।
- https://shisrrj.com/paper/SHISRRJ2472126.pdf Source : Shadhshauryam, Vlume 7, Issue 2 (2024).